साथी हाथ बढ़ाना

पाठ का सार /प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'साथी हाथ बढ़ाना' के लेखक 'साहिर लुधियानवी' जी हैं। पाठ में मिल-जुल कर रहने की बात की गई है। अकेला व्यक्ति काम करते हुए जल्दी थक जाता है लेकिन मिल-जुल कर काम करने से कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से सम्भव हो जाता है क्योंकि हमें एक दूसरे से सहायता मिलती है साथ ही साथ एक दूसरे को देखकर हिम्मत भी मिलती है। अकेला इंसान किसी भी कठिन कार्य को करने में असमर्थ होता है। सामूहिक रूप से कार्य करने में शक्ति का अधिक संचार होता है। हमें किसी भी कार्य को मेहनत से करना चाहिए क्योंकि मेहनत से किए गए कार्य का परिणाम हमेशा अच्छा होता है। निरंतर प्रयास करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए।

एकता में बहुत ताकत होती है। हमारे आस-पास के वातावरण और प्रकृति भी हमें एकता का संदेश देते हैं। एक-एक बूँद पानी भी यदि एक साथ मिल जाएँ तो विशाल सागर का निर्माण हो सकता है। थोड़ा-थोड़ा संचय करके भी हम बहुत संग्रह कर सकते हैं। अगर सब एक साथ मिल जाए तो किस्मत को भी अपने वश में किया जा सकता है।

कविता का भाव सौन्दर्य -

(1) कविता में एक जुट होकर परिस्थितियों का सामना करने की बात की गई है।
(2) किसी को भी छोटा समझने की भावना का विरोध किया गया है।
(3) मेहनत करने की सीख दी गई है।

कविता की भाषा / शैली -

(1) कविता की भाषा खड़ी बोली हिंदी है।
(2) **'आज अपनी'** में **'अ'** वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।
(3) कविता में लय बद्धता है।

कविता का उद्देश्य -

(1) लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम भावना का उदय करना ही कविता का उद्देश्य है।
(2) परिश्रम के महत्व को बताया गया है।

कविता का संदेश -

कविता के माध्यम से लोगों को एकता का संदेश दिया गया है। यदि अपसी प्रेम और साथ हो तो असम्भव कार्य भी सरलता से सम्भव हो जाता है।